उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा

(अडिल्ल छन्द)

नारि देव नर पशू काष्ट चित्राम की ।
ब्रह्मचर्य व्रत धारिन के नहिं काम की ।
मन वच काया मात सुता भगिनी गिनै ।
ऐसो व्रत ब्रह्मचर्य पूजि हम अघ हनै ।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांग ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सतिहितो भव भव वषट् ।

(त्रिभंगी छन्द)

ले निर्मल पानी अति सुख दानी, उज्वल आनी गंग तनों ।
धरि कनक सु झारी मन हरनारी, निज कर धारी हरष ठनौं ।।
करि भक्ति सु लाऊँ अति गुण गाऊँ, पुण्य बढ़ाऊँ सुखदाई ।
जजि ब्रह्म सुचारी वर शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

ले बावन चन्दन दाहनिकन्दन, अगर घिसन्दन नीर करी ।
तिस गंध लुभाया षटपद आया, गुंज कराया हर्ष धरी ।।
शुभ गंध मंगायो पात्र धरायो, बहु महंकायो सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ।

ले अक्षत चोखे लखि निरदोखे, उज्वल धोके हित धारी ।
मुक्ताफल जैसे गन्धित तैसे, दीरघ जैसे जो भारी ।।
निर्मल जु अखण्डित सौरभ मण्डित, शशिमद खंडित सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्व० ।

बहु फूल जु लाया गंध सु भाया, रंग सुहाया सुख खानी ।
तसु माल बनाई सुभग सुहाई, अलिगण भाई मनमानी ।।
मैं निज कर लायो हरष बढ़ायो, जिन गुण गायो सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।५।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

नैनेद्य सु नीका रसजुत ठीका, सुखदा जीका गुण थानो ।
करि मोदक लाया मधुर सुहाया, थाल भराया, थुति गानो ।।
जिन अग्र चढ़ाऊँ मुख गुण गाऊँ, अति हरसाऊँ सुख पाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

मणि दीपक करिया तिमिर सु हरिया, ज्योति सुधरिया तेज खरा ।
धरि थाल सु लाया हरष बढ़ाया, अति गुण गाया नेह धरा ।।

मैं करौं आरती गाय भारती, धर्म सारथी शिवदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।

करि धूप पियारी दशविधि धारी, गंध अपारी मनमानी ।
शुभ चन्दन डारा अगर अपारा, द्रव्य सु प्यारा बहु आनी ।।
अपने कर लाया नेह लगाया, अगनि जराया सुस गाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी बरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।८।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

ले लौंग बदामा श्रीफल कामा, खारिक ठामा हम लाये ।
पुंगीफल आदी बहुफल स्वादी, भक्ति अराधी सुख पाये ।।
भरि थाल अपारा शिव फलकारा, पाप विडारा सुखदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

जल चन्दन लाया अखित सु भाया, फूल मिलाया गंध भरी ।
चरु दीपक आनो धूप दहानो, फल अधिकानो शिवकारी ।।
वसु द्रव्य मंगाई अर्घ बनाई, भगति बढ़ाई शिवदाई ।
जजि ब्रह्म जु चारी वरि शिवनारी, आनंदकारी थिर थाई ।।१०।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

अथ प्रत्येकार्घाणि

तिया वास तहं वास न कीजै, अपना शीलभाव रखि लीजै ।
सकल नारि जननी सम होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।१।

ॐ ह्रीं स्त्रीसहवासवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घं ।

नारी तन रतिभाव न देखै, हाव भाव विभ्रम नहिं पेखै ।
शिल धर्मतैं निज सुख जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।२ ।।

ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

राग वचन कबहूँ नहिं बोलैं, निज वच जिनवाणी सम तोलै ।
राग वचन सुन प्रीति न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।३ ।।

ॐ ह्रीं रागवचनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

पूरब भोग किये न चितारै, सोही शील भाव उर धारै ।
राग भाव तजि निज रस जोबै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।४ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वभोगानुस्मरणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

काम उदीपक अशन न खावै, षड्रस माहि न जिय ललचावै ।
निशदिन शील भावना भावै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।५ ।।

ॐ ह्रीं वृष्येष्टरसवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

तन श्रृंगार नहीं मन भावै, भूषित देखि नहीं हरसावैं ।
शीलाभरण विभूषित होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।६ ।।

ॐ ह्रीं स्वशरीरसंस्कारवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

नारी की शय्या नहिं पोंडै, कपड़ा नारि तनो नहिं ओड़ै ।
शीलविरत ताकै दिढ़ होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।७ ।।

ॐ ह्रीं स्त्रीशय्यासनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कबहुं न कामकथा मन आई, विकथा काननतैं न सुनाई ।
ताके मदन चाह नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।८ ।।

ॐ ह्रीं कामकथावर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

पूरण उदर अशन नहिं खावै, ऊनोदर में चित रमावै ।
शील पालना ताकै होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।९।।

ॐ ह्रीं उदरपूर्णाशनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

नवधा शील धरै जो कोई, ताके ब्रह्मचर्य व्रत होई ।
इस व्रततैं भव तरनो होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१०।।

ॐ ह्रीं नवधाशीलपालनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामदेव वश तन तप होई, जिमि तरु होय तुषार दसोई ।
यह शोषण शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।११।।

ॐ ह्रीं शोषणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामबाण जाके मन मांहीं, मन संताप रहै अधिकाई ।
कामबाण संताप न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१२।।

ॐ ह्रीं संतापकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामबाण उच्चाट करावै, रहै उदास कछू न सुहावै ।
उच्चाटन शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१३।।

ॐ ह्रीं उच्चाटनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामीजन को काम सतावै, ता वश ताहि न कछू सुहावै ।
वशीकरण शर बाण न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१४।।

ॐ ह्रीं वशीकरणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामदेव तैं गहल जु होई, सुधि बुधी ताहि रहै नहिं कोई ।
सो मोहन शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१५।।

ॐ ह्रीं मोहनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

ये शर काम कहे लौकीका, सबतैं बड़ौ मोह रिपु जीका ।
जहं ये पांच बाण नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१६।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

रूप तिया को लखि मुलकावै, वृथा पाप शिरमांहि चढ़ावै ।
ये शर ताके मांहि न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१७।।

ॐ ह्रीं मुलकनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

बार बार तिय देखन चाहै, जाको उर अवलोकन दाहै ।
जाके उर यह शर नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१८।।

ॐ ह्रीं अवलोकनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

ये चाहै पै ताहि न भावै, हास्य वचन कहि ताहि रिझावै ।
यह शर काम तहां नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।१९।।

ॐ ह्रीं हास्यकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

परगट वचन कहन नहिं पावै, सैन करै तिय जिय ललचावै ।
जाके यह शर काम न होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।२०।

ॐ ह्रीं इंगितचेष्टावर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

कामदेव जब अधिक सतावै, मिलै तिया नहिं प्राण गमावै ।
ये शर काम जहां नहिं होवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।।२१।।

ॐ ह्रीं मारणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

दश विध कामबाण नशि जाई, शील बाढ़ि पालै नवधाई ।
सो जिय शिवसुन्दरिको जोवै, ब्रह्मचर्य जजि सब अघ खोवै ।२२।

ॐ ह्रीं शुद्धब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घं ।

जयमाला

(दोहा)

शील शिरोमणि जगतमें, सकल धरम शिरमौर ।
शिवकर अघ हर पुण्य भर, जजों शीश गुण ठौर ।।१।।

(वेसरी छन्द)

शील सिद्ध थल का मग जानो, शील सुरग सरिता मन आनो ।
शील भावतैं अघ नशि जाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।२।।

शील मनुजभव में ही गाया, नहिं निज जन्म सफल करि भाया ।
शील समुद-संसार तराई, सांचा धर्म शील है भाई ।।३।।

शील सहाय करै जग जाकी, सुरनर सेव करत हैं ताकी ।
ताको नाम लेत दुख जाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।४।।

शील सती सीता ने धारो, अग्निकुण्ड शीतल करि डारो ।
शील प्रभाव जगत पुजवाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।५।।

शील सती द्रौपदि ने धारो, ता फल कीचक भीम विदारो ।
भूप हरी पीछैं फिर आई, सांचा धर्म शील है भाई ।।६।।

शील सती नीली मन आनो, सुरनर पूजा भई जग जानो ।
दोष सकल जातें नशि जाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।७।।

शील गुणवती कन्या लीनो, ताको देव सहाय जु कीनो ।
शीलविरत तैं सुरगति पाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।८।।

शील सती सोमा ने धारा, ता फल सरप भयो मणिहारा ।
जग जश ले सुरलोक सिधाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।९।।

सेठ सुदर्शन यह व्रत कीनों, पुण्य प्रताप सुजश जग लीनों ।
शील सुरेन्द्र सिद्ध पद दाई, सांचा धर्म शील है भाई ।।१०।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

❀ इति उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा ❀

*

समुच्चय जयमाला

(सोरठा)

धरम जगतमें सार, उत्तम क्षमा जु आदि दे ।
भवदधि तारनहार, नमों धरम दशलक्षिणी ।।१।।

(वेसरी छन्द)

क्षमा धरम सब जगमें आला, निज परिणति को है रखवाला ।
क्षमा धरम गुण रतन भंडारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।२।।

मार्दव धरम सकल गुण वृन्द, मान विहंडन शिवसुख कंदा ।
मार्दव गुण तैं विनय प्रसारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।३।।

आर्जव रीति सकल सुखदानी, सरल स्वभाव कुटिलता हानी ।
आर्जव शिवपुर पंथ सहारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।४।।

सत्य धरम सम सार न कोई, सत्य धरम जिनभाषित होई ।
सत्य सकल सन्तनि को प्यारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।५।।

शौच धरम निर्मलता होई, शौच धरम सब विध मल खोई ।
शौच धरम शिवमंदिर द्वारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।६।।

संयम मन इन्द्रिय वश लावै, त्रस थावर के प्राण रखावै ।
संयम भाव सदा उर धारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।७।।
तप सब आशा पाशी तोरे, कर्म अनादि बंध को छोरे ।
तप जल तैं ह्वै अघ मल न्यारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।८।।
त्याग पाप-मल धोवन हारा, त्याग धरम उर करै उजारा ।
त्याग भावतें कर्म निवारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।९।।
नगन मोक्ष का बड़ा निशाना, नगन विना नाहीं शिव थाना ।
आकिंचन वृष नगन विचारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।१०।।
ब्रह्मचर्य शिवनारि मिलावै, ता विन जीव जगत भरमावै ।
ब्रह्मचर्य ह्वै थिर मन धारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।११।।
ऐसे दश विधि धरम पियारा, जन्म रोग हर औषधि सारा ।
'टेक' धरम निज पर निरवारो, मोकूं भवसागर तैं तारो ।।१२।।

(दोहा)

आतम अवलोकन धरम, दशविध धरि मन लाय ।
जल फलादि वसु द्रव्य तैं, धर्म जजौं हरषाय ।।१३।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिब्रह्मचर्यपर्यंत-दशलक्षणधर्मांगाय पूर्णार्घं ।

दशविधि धर्म उपाय को, भवसागर तरि जाय ।
मनवांछा मेरे यही, भव भव होय सहाय ।।१४।।

। इत्याशीर्वादः ।

(फिर १०८ जाप्य देकर आरती करके शांति विसर्जन करे)

इति दशलक्षणधर्म मण्डल विधान समाप्त ।

❋

दशलक्षण धर्म पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम् ।
स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषितम् ।।

(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(सोरठा)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा ।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा ।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा ।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस-संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा ।

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

आठों दरब सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसौं।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंग-अर्घ्य

(सोरठा)

पीड़ैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा।।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो।।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बाँध मार बहुविधि करै।
घर तैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरै।।
ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।

उत्तम मार्दव गुन मन-माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया।।

रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु-सम्पदा।।

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये।।
करिये सरल तिहुँ जोग अपने देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी।।
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में।।

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।।
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं।।
ऊपर अमल मल भर्‌यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।

उत्तम सत्य-बरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये।।

ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया।
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम-रतन सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं।।

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाँ हीं।।
ठाहीं पृथीवी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो।।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम।।

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना।
बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा।।
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता।।
अति महा दुरलभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए।।

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै।।
दोनों सँभारै कूप-जल सम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।।

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए।।
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लँगोटी की दुख भालै।।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं।।
घर माहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा।।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे।।
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं।।
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैड़ि चढ़ि कै, शिव-महल में पग धरा।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

दश लच्छन वन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।

(चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे।।
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी।।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।
उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करै, ले साता।।
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुकति-फल पावे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि।
अजर अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुख की राशि।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है।।टेक.।।
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है।।१।।
कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है।।२।।
शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है।।३।।
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन सबको नाश बताया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके ''दौल'' तास जस गाया है।।४।।